नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर
स्थापित २००५ ई.
7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक..... दिनांक : 06-10-2019

प्रकाशनार्थ

(राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन तृतीय तकनीकि सत्र के व्याख्यान)

महाराणा प्रताप पी. जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर में भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित एवं भूगोल विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन के **तृतीय तकनीकि सत्र** की अध्यक्षता करते हुए दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग के पूर्व अध्यक्ष **प्रो. एस. के दीक्षित** ने **'वैश्विक ऊर्जा एवं परिदृश्य में भारत की स्थिति एवं सम्भावनाएं'** विषय पर व्याख्यान देते हुए कहा कि भारत एक अनूठा देश है जहां पर भौगोलिक तत्वों की विषमता पायी जाती है परन्तु इन्ही भौगोलिक विषमताओं में ऊर्जा के वैकल्पित नवीनीकरण स्त्रोतो का भरमार है उन्होंने ऊर्जा संकट के बारे में कहा कि संकट ऊर्जा पर नही बल्कि संकट मानवतता पर यानि जनसंख्या (वृद्धि)। उन्होंने कहा कि हर राष्ट अपनी संसाधन सम्पन्नता से प्रभावित होता है राष्ट्रीय सुरक्षा और राष्ट्रीय संसाधनो को केन्द्रित होना चाहिए। संसाधनों के प्रति हमारा विचार मानवीय व्यवहारिक होना चाहिए। संसाधनों का उपयोग व्यवहारिक और नीतिगत होनी चाहिए। जनसंख्या और संसाधन में संतुलन स्थित होनी चाहिए हमें अनुकूलतम जनसंख्या के सिद्धान्त को अपनाना चाहिए। प्रो. दीक्षित जी ने पांच शक्ति तत्वों की प्रकृति की व्याख्या करते हुए कहा कि भूमि जो शिव शक्ति, आकाश जो विष्णु शक्ति, वायु जो सूर्य शक्ति, अग्नि दुर्गा शक्ति, जल गणेश शक्ति है इसलिए हमें इन प्राकृतिक तत्वों के रूप में घूमना चाहिए और समस्त शक्तियों का देव रूप में संरक्षण होगा तो कभी भी ऊर्जा संकट का सामना नही करना पड़ेगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए उन्होंने सभी शोध पत्रों की समीक्षा की और शोध छात्रों को शुभकामना दी।

तृतीय तकनीकि सत्र में सह–अध्यक्षता करते हुए टीम. एम. भागलपुर, विश्वविद्यालय, बिहार, के **प्रो. एस. एन. पाण्डेय** ने ' भारत में ऊर्जा की सम्भावनाएं' विषय पर अपना शोध पूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि भारत में पारिस्थितिकी ऊर्जा की वर्तमान दशा एवं प्राकृतिक संसाधनो के व्यापक क्षय पर्यावरण में निरन्तर हो रहे परिवर्तन के लिए हो रहे औद्योगीकरण एवं नगरीकरण ही जिम्मेदार है। पर्यावरण सन्तुलन एवं सरंक्षण के लिए ऊर्जा दक्षता को बढ़ावा देना चाहिए। बड़े पैमाने पर ऊर्जा का उपयोग करने वाले उद्योगों में ऊर्जा कटौती की मितव्ययिता को वैज्ञानिक बनाना होगा। भारत में बाजार आधारित संरचना के साथ अधिक ऊर्जा के बचत के लिए एक ढांचा तैयार करना चाहिए। घरेलू एवं खाद्य ऊर्जा अनिवार्य आश्रीत ऊर्जा डीजल, पेट्रोल आदि पर निर्भरता कम करनी होगी, इसके लिए वायोडीजल एथेनाल आदि विकल्प तलाशने होंगे। ऊर्जा संकट का प्रभाव अधिकाशतः प्रभाव विकासशील देशो पर पड़ा है क्योंकि इनकी सबसे अधिक खपत है खासकर जो राज्य नगरीकरण और औद्योगीकरण दृष्टि से अग्रणी दिल्ली, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, चण्डीगढ़ आदि है यहा पर जैविक ऊर्जा को बढ़ावा देकर ऊर्जा संकट को कम किया जा सकता है।

इससे पूर्व सत्र में **'भारत में सामुद्रिक ऊर्जा का भविष्य'** विषय पर **डॉ. रमाकान्त दूबे** शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए कहा कि भारत में समुद्र तट काफी लम्बा है यहां पर तट के किनारो पर समुद्री धाराओं के कारण यहां पर समुद्री तरंगीय ऊर्जा की अपार सम्भावनाएं है यहां वैश्विक रूप में तुलना किया जाय तो भारतीय तट लगभग दक्षिणी पूर्वी एशिया एवं अमेरिका के बाद दक्षिणी एशिया में भारत बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है विद्युत तरंगीय ऊर्जा के उपयोग को विकसित करने के लिए। इन्होंने अपने शोध प्रपत्र में बताया कि जिस तरह से ऊर्जा विद्युत उपयोग के लिए प्रयोग की जा रही है उससे 2024 तक अत्यधिक ऊर्जा संकट बढ़ जाएगा। इसलिए भारतीय तटीय क्षेत्रों में सामुद्रिक तरंगीय ऊर्जा को विकसित किया जाना चाहिए। ऐसे क्षेत्रों मे खम्भात की खाड़ी, खाड़ी क्षेत्रों में अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

डॉ. अभिषेक सिंह ने **'भारत में नाभकीय ऊर्जा : चुनौतियाँ और सम्भावनाएँ'** विषय पर अपना शोध पूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि भारत में नाभिकीय ऊर्जा के सामने चुनौतियों को देखा जाय तो परमाणू कचरे की निस्तारण की समुचित व्यवस्था, नाभिकीय संयत्रों की रिसाव विकसित देशों में पर अत्यधिक निर्भरता है। इसके लिए भारत को अपशिष्ट ऊर्जा के नवीनीकरण पर जोर देना होगा और भारत को नाभिकीय ऊर्जा के व्यापक उपयोग के लिए विकसित देशों से सम्बंध अच्छे रखने होंगे।

(डॉ. राजेश शुक्ला)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी